लिपि का उद्भव एवं विकास

डॉक्टर पूजा असिस्टेंट प्रोफेसर

हिंदी विभाग

जैन कन्या पाठशाला (पी.जी.) कॉलेज

मुजफ्फरनगर उत्तर प्रदेश

लिपि-लिपि को अंग्रेजी में स्क्रिप्ट कहते हैं जिसका शाब्दिक अर्थ वर्ण या अक्षर के अंकित चिन्ह, लिखावट, लिखे हुए अक्षर, लिखने की पद्धतियां इत्यादि हैं।डॉक्टर शिव चंद्र ने लिपि की परिभाषा देते हुए कहा है कि –लिपि दृश्य यादृच्छिक प्रतीकों की व्यवस्था है जिसके माध्यम से एक समुदाय परस्पर लिखित विचार विनय में करते हैं। भाषा श्रव्य होती है और इसे दृष्टिगोचर बनाने के लिए जिन ध्वनि प्रतीकों का प्रयोग किया जाता है उन्हें लिपि या लिपि चिन्ह कहते हैं।

लिपि का उद्भव और विकास –

भाषा की उत्पत्ति के समान ही लिपि की उत्पत्ति का प्रश्न भी विवाद ग्रस्त एवं मात्र अनुमान पर आधारित है। लिपि की उत्पत्ति कब कैसे हुई ? इस संबंध में मत विभिन्न है। यह भारतीयों की देन है अथवा विदेशी अनुकृति है ? लेखन के आरंभिक साधन क्या थे? लिपि का विकास किससे हुआ?इत्यादि अनेक ऐसे प्रश्न हैं जिनके विषय में निश्चित रूप से कुछ कहा नहीं जा सकता है। यह प्रश्न आज भी एक समस्या अथवा पहेली के रूप में हमारे समक्ष विद्यमान हैं ।

अधिकांशत:, विद्वानों की यह मान्यता है की भाषा की भांति लिपि भी मानव बुद्धिमता की अर्जित संपत्ति है मनुष्य की आवश्यकतानुसार मनुष्य द्वारा ही लिपि का जन्म हुआ है अब तक की उपलब्ध सामग्री के आधार पर प्राचीनतम लिपि चिन्ह 6000 वर्ष पूर्व तक मिलते हैं।

- लिपि के विकास क्रम के संदर्भ में छह प्रकार की लिपियां प्राप्त होती है –
- चित्र लिपि
- सूत्र लिपि
- प्रतीकात्मक लिपि
- भाव लिपि
- भाव ध्वनि मूलक लिपि
- ध्वनि लिपि

इनमें चित्र लिपि, भाव लिपि एवं जोहनी लिपि मुख्य लिपियां है शेष गोण लिपियां है।

- **चित्र लिपि –**चित्र लिपि का वह प्राचीनतम व प्रारंभिक रूप था जिसमें वस्तुओं को चित्रों के द्वारा अंकित किया जाता था। यह लेखन इतिहास की पहली सीढ़ी थी। चित्र लिपि के नमूने फ्रांस, स्पेन, यूनान, इटली, ब्राजील इत्यादि देशों में मिलते हैं।
- **भाव लिपि-**विकास की द्वितीय मुख्य सीढ़ी भावलिपि थी। भाऊ लिपि वह लिपि थी जो ध्वनियों को व्यक्त न करके भावों विचारों और वस्तुओं आदि को प्रकट करती थी।यह वस्तुत: चित्र लिपि का ही विकसित रूप था।
- **ध्वनि लिपि-**देवेंद्र नाथ शर्मा ने लिखा है कि लिपि के विकास में ध्वनि लिपि सबसे बड़ी उपलब्धि है क्योंकि इसमें चित्र एवं भाव की भूमिका से ऊपर उठकर प्रत्येक ध्वनि को अंकित करने की क्षमता का विकास पाया जाता है ध्वनि लिपि के उदाहरण के रूप में देवनागरी रोमन अरबी इत्यादि लिपि को ले सकते हैं । निःसंदेहलिपि विकास की उल्लेखनीय देन ध्वनि लिपि थी जिसमें प्रत्येक ध्वनि के लिए कुछ संकेतों का निर्धारण हुआ और उसके द्वारा भावों विचारों की अभिव्यक्ति होने लगी।

- लिपि विकास के अंतर्गत सूत्र लिपि प्रतीकात्मक लिपि एवं भाव ध्वनि मूलक लिपियों का भी उल्लेख मिलता है वस्तुतः यह गुण लिपियां है इन्हें इस प्रकार देखा जा सकता है-

१-सूत्रों में गांठ आदि देकर भाव व्यक्त करने की परंपरा सूत्र लिपि है सूत्र लिपि का उल्लेख हेरोडोटस ने किया है ।

२-प्रतीकात्मक लिपि वास्तविक अर्थ में लिपटी नहीं थी बल्कि इसमें कुछ प्रतीकों के माध्यम से भाव अभिव्यक्ति की जाती थी।

३-भाव ध्वनि मुलक लिपि कुछ अंशों में यह लिपि भाव मूलक थी और कुछ अंशों में ध्वनि मुलक थी।

- उपर्युक्त विवेचन के आधार पर कहा जा सकता है कि लिपि के विकास में सूत्र लिपि एवं प्रतीकात्मक लिपि का कोई महत्वपूर्ण स्थान नहीं था। इनका पूर्वर्ती चित्र लिपि अथवा परवर्ती भाव मूलक या ध्वनि मूलक लिपि से भी कोई सरोकार नहीं था लिपि के विकास का प्रथम चरण चित्र लिपि है जिसके विकास का अगला चरण भाव मुलक लिपि है। कालांतर में भाव मूलक लिपि विकसित होकर भाव ध्वनि मूलक लिपि और फिर यह ध्वनि मूलक लिपि में विकसित हुई। ध्वनि मूलक लिपि में भी आक्षरिक ध्वनि मूलक लिपि का इस्थान पहले आता है, फिर वर्णिक ध्वनिमूलक लिपि आती है। वस्तुतः चित्र लिपि विकास क्रम की प्रथम सीढ़ी है वर्णिक ध्वनि मूलक लिपि विकास क्रम का अंतिम सोपान है।

धन्यवाद